भक्ति - सर्वोच्च आध्यात्मिक निधि को प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग है

श्रील गुरुपादपद्म नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद १०८ श्रीश्रीमद्भक्ति प्रमोद पुरी गोस्वामी ठाकुर प्राय: श्रीमद्भागवतम से श्रीकृष्ण द्वारा कथित इन शब्दों को उद्धृत करते थे –

कर्मणा जायते जन्तु: कर्मणैव प्रलीयते ।
सुखं दु:खं भयं क्षेमं कर्मणैवाभिपद्यते ॥ (भा: १०.२४.१३)

अर्थात भगवान कृष्ण ने नंद महाराज से कहा – जीव अपने कर्म के अनुसार ही जन्म ग्रहण करता है, और केवल कर्म से ही वह विनाश को प्राप्त होता है। उसे उसके कर्म के अनुसार ही सुख–दुःख, कष्ट, भय एवं सुरक्षा की भावना की प्राप्ति होती हैं।

अस्ति चेदीश्वर: कश्चित्फलरूप्यन्यकर्मणाम् ।
कर्तारं भजते सोऽपि न ह्यकर्तु: प्रभुर्हि स:॥ (भा: १०.२४.१४)

अर्थात यदि कर्मों को ही सब कुछ न मानकर उनसे भिन्न जीवों के कर्म का फल देनेवाला ईश्वर माना भी जाये तो वह कर्म करनेवालों को ही उनके कर्म के अनुसार फल दे सकता है। कर्म न करनेवालों पर उसकी प्रभुता नहीं चल सकती।

पूर्व आचार्यों ने यह वर्णन किया है –

ज्ञान–काण्ड, कर्म–काण्ड, केवल विषयेर–भाण्ड,
अमृत बलिया जेबा खाये।
नाना योनि सदा फिरे, कदर्य भक्षण करे,
तारा जन्म अधः पाते जाये॥

वह प्रक्रिया अथवा कर्म जो भगवान को संतुष्ट करने के लिए नहीं किया जाता है और कोई भी ज्ञान जो हमें भगवान से दूर ले जाता है, उसे 'विष' कहा गया है। भौतिक कर्म हमारी लाभ, पूजा और प्रतिष्ठा की प्रवृत्ति को वर्धित करता है। यह सब भक्ति मार्ग में बाधाएँ हैं। मेरे जैसे पाखंडी संन्यासी को अपनी दृष्टि में रखते हुए, मेरे परम पूज्य परम गुरुदेव (श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर प्रभुपाद) के गुरुदेव, परम पूज्य गुरुदेव नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद परमहंस कुलचूड़ामणि श्रील गौर किशोर दास बाबाजी महाराज ने इस प्रकार उल्लेख किया है –

"साधारण लोगों के मत अनुसार, हरि–भक्ति का परिमाण नहीं किया जा सकता। यदि हरिभजन में कपटता, अर्थात कृत्रिम वैराग्य है, तो इसे भक्ति की वास्तविक प्राप्ति नहीं कहा जा सकता है। जब भक्ति की वास्तविक परीक्षा की जाती है तब ऐसे कृत्रिम वैराग्य का स्वतः ही उजागर हो जाता है। दूसरी ओर यदि हरिभजन कपटता से मुक्त हो तो, वैराग्य स्वतः ही प्रकट हो जाएगा। भक्ति दूसरों के सामने प्रकट करने की वस्तु नहीं है, अपितु हृदय में स्वाभाविक प्रेम विकसित करने के लिए अत्यंत गुप्त रूप में साधन करना होगा। यदि भगवान के प्रति यथार्थ आसक्ति नहीं है और केवल कृत्रिम वैराग्य का प्रदर्शन मात्र है, तो कृष्ण की कृपा प्राप्त करने का कोई उपाय नहीं है; अपितु वह व्यक्ति ही भगवान से दूर हो जाता है। कृष्ण उसी भक्त की ओर दौड़ते हुए आते हैं, जिसके पास कपटता रहित यथार्थ आसक्ति है। जिसने कृत्रिम संन्यास के वस्त्र को ग्रहण किया है, उसके पास भगवान श्रीहरि के प्रति वास्तविक भक्ति का बिंदु मात्र नहीं है, अपितु भौतिक इंद्रियों के भोग में सलग्न रहता है, वह इस प्रकार श्रीकृष्ण द्वारा धोखा दिया जाता है। जो भगवान श्रीहरि के दिव्य स्वरूप के प्रति स्वतः ही आसक्त है, वह बाहरी रूप से कुष्ठ रोग से पीड़ित होने पर भी, अपनी सेवा भाव के कारण अपने ही अंगों की सुगंध से कृष्ण को मोहित कर लेता है।"

श्रील बाबाजी महाराज के उपर्युक्त शब्दों से यह स्पष्ट हो गया है कि पाखंड अथवा कपटता द्वारा भगवान श्रीहरि को संतुष्ट नहीं किया जा सकता। यह मानव जन्म केवल भगवान की सेवा के लिए है। भ्रम के जाल से आच्छादित होने के कारण, हम भक्ति के पथ को कोई महत्त्व नहीं देते, जो कि भगवान को प्रसन्न करने का एकमात्र उपाय है, अपितु ज्ञान और कर्म के मार्ग का ही आश्रय ले लेते हैं। हम इस मायिक जगत में विभिन्न शरीर ग्रहण करते हैं और भौतिक अस्तित्व से भटकते हैं। भगवान ने हमें यह मनुष्य शरीर प्रदान कर, इस दुःख के जगत में भेजा दिया। हमें स्वयं को भ्रम के चंगुल से पूर्ण रूप से मुक्त करने और परम पूज्य भगवान श्रीहरि की सेवा करने के लिए परमासक्ति को विकसित करने की आवश्यकता है। इस प्रकार इसी जीवन में, हम चिरकाल के लिए भगवान के अनंत आनंदमय आध्यात्मिक धाम में पुनः लौट सकते है।

जो लोग इस भौतिक जगत की माया से प्रभावित हो अपनी बुद्धि का प्रयोग, भगवान की इंद्रियों को संतुष्ट करने के स्थान पर, अपनी ही इन्द्रियों को संतुष्ट करने में सलग्न रहते हैं, वे मनुष्य जीवन के अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करने से विच्युत हो जाते हैं, जो कि दिव्य ज्ञान का आस्वादन करना है। वे इस प्रकार स्वयं को चिरकाल के लिए संकट में डुबा देते हैं।

हम यक्ष और धर्मराज युधिष्ठिर के परस्पर वार्तालाप से यह जानते हैं की *"महाजनो ये गताः स पंथः"* – महाजनों ने स्वयं के उदाहरण के माध्यम से दिखाया है कि गोलोक में भगवान की सेवा में संलग्न होना ही जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है, जो केवल मात्र भक्ति से ही प्राप्त होता है।

वैष्णव जगत के गुरुवर्ग ने स्वयं के उदाहरण द्वारा हमें इस भक्ति मार्ग की शिक्षा दी है। मेरे गुरुपदपद्म ने श्रीगोपीनाथ गौड़ीय मठ की स्थापना हमें यह शिक्षा प्रदान करने के लिए की कि हमें अपने दैनिक जीवन में भक्ति के मार्ग पर कैसे चलना है। हम शास्त्रों के माध्यम से यह जानते हैं कि भक्ति जीवों को भगवान के निकट ले जाती है। भक्ति जीव को परमेष्ठ भगवान का दर्शन कराती है। वह भगवान केवल भक्ति के ही अधीन है – इसलिए भक्ति सर्वोच्च है।

हमारे संप्रदाय के प्रधान आचार्य, प्रभुपाद श्रील रूप गोस्वामी ठाकुर ने हमें शुद्ध भक्ति के संबंध में निम्नलिखित बताया है, *"अन्याभिलाषिता शून्यं ज्ञान–कर्माध्यानावृतं। अनुकूल्येन कृष्णानुशीलनम भक्तिरुत्तमा॥"* – अर्थात श्रीकृष्ण को सुखी करने की स्पृहा के अतिरिक्त समस्त प्रकार की अभिलाषाओं से रहित, ज्ञानकर्मादिके द्वारा अनावृत, एकमात्र श्रीकृष्ण की प्रीति के लिए ही कायिक, मानसिक और वाचिक समस्त चेष्टाओं और भाव के द्वारा तैल–धारावत अविछिन्न गति से जो श्रीकृष्ण का अनुशीलन अर्थात श्रीकृष्ण की सेवा की जाती है, उसे उत्तमा भक्ति कहते हैं।

मेरे गुरुपादपद्म का आध्यात्मिक बाल्यकाल आज के समाज के लिए एक प्रमुख उदाहरण स्वरूप है। मेरे गुरुपादपद्म शुद्ध वैष्णवों के समुदाय के आभूषण थे, और उन्होंने मानव समाज को विनम्र बनने की शिक्षा प्रदान की। किन्तु, हम आज क्या कर रहे हैं? यदि हम इस पर विचार करें तो हम समझेंगे कि शुद्ध भक्ति का अभाव है। वैष्णव–धर्म का मूल ही विनम्रता है। सच्चिदानंद भक्तिविनोद ठाकुर ने अपने एक कीर्तन के माध्यम से हमें समझाया, *"दैन्य दया अन्य मान प्रतिष्ठा वर्जन। चारि गुणे गुणी हय करह कीर्तन॥"* – शुद्ध भक्ति का साधन करना ही वैष्णव धर्म है। वास्तव में वैष्णव साधु हैं।

वे शुद्ध भक्ति का साधन करते हैं और समाज के सभी जीवों के परम आध्यात्मिक कल्याण के लिए कार्यशील रहते हैं। इन वैष्णवों के असीमित गुण हैं, किन्तु उनके व्यवहार में चार मुख्य गुण देखे जाते हैं – नम्रता, सभी जीवों के शुभचिंतक, उन पर दया करके उनके वास्तविक स्वरूप की उपलब्धी करना, और सभी प्रकार की स्थिति को पूर्ण रूप से त्याग करते हुए सभी को सम्मान देना। ऐसे व्यक्ति हरे कृष्ण महामंत्र का पूर्ण हृदय से

और बिना किसी अपराध के आश्रय ग्रहण करते हैं। उनके हाथों में पवित्र मंत्रों की माला होगी और उनकी जिह्वा पर श्रीहरि का नाम नृत्य कर रहा होगा। किन्तु, हम अपनी स्वतंत्रता का दुरुपयोग करते हैं और कृष्ण की इंद्रियों को संतुष्ट करने के नाम पर अपनी इंद्रियों को संतुष्ट करने के लिए आचार्यों की शिक्षाओं का भ्रामक रूप से उपयोग करते हैं। फलस्वरूप, अधिकांश वैष्णव वास्तविक दीनता का अभ्यास करने के स्थान पर, जगत को अपनी महानता का प्रचार करने में लगातार व्यस्त हैं। अत: यह कहना असत्य नहीं होगा कि वैष्णव समाज में वैष्णव धर्म का परम फल अर्थात् एक-दूसरे के प्रति परस्पर प्रेम-सम्बन्ध होना, आज वैष्णव समाज में अनुपस्थित है। श्रीचैतन्यचरितामृत के रचयिता श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी, जो आध्यात्मिक जगत् में कस्तूरी मंजरी हैं, ने दीनता वश लिखा है, *"पुरीषेर कीट हइते मुई से लघिष्ठ, जगाई मधाई हइते मुई से पापिष्ठ"* – श्रील कविराज गोस्वामी कहते है कि वे मल के एक कीड़े से भी निम्न हैं और वे जगाई और मधाई से भी अधिक पापी है, जिन्होंने भगवान चैतन्य की लीलाओं में सभी पापपूर्ण कार्य किए थे। एक बार, जब एक वैष्णव ने कहा कि मेरा गुरुपादपद्म एक कनिष्ठ-अधिकारी है, जिससे मुझे अत्यंत क्रोध आया, परन्तु मेरे श्रील गुरुदेव ने यह उत्तर दिया, "अरे! मैं एक कनिष्ठ-अधिकारी से भी निम्न स्तर पर हूँ। मैं कनिष्ठ-अधिकारी कहलाने के योग्य भी नहीं हूँ। किन्तु इन वैष्णव ने दया की है और मुझे इस स्तर पर स्थित होने का अधिकार प्रदान किया है। यह मेरे लिए प्रसन्नता की बात है। इस बात पर क्रोधित होने के स्थान पर आपको आनंदित होना चाहिए।"

वर्तमान वैष्णव समाज में वैष्णवों में वैष्णवोचित गुणों की आभाव के कारण हम प्रेम के स्थान पर छल-कपट, अभिमान और कलह देखते हैं। जो वैष्णव बनने के लिए भक्ति के मार्ग पर अग्रसर हुए हैं, उनका कर्तव्य है कि वे अपने आतंरिक हृदय से देखें कि इन वैष्णव गुणों को कैसे विकसित किया जाए। अन्यथा, परम आध्यात्मिक लक्ष्य की खोज में भक्ति का माना जाने वाला साधन केवल एक मजाक होगा। भक्ति का वास्तविक अर्थ है – भगवान और उनके भक्तों की आतंरिक हृदय सहित प्रेम से सेवा करना। स्वयं का क्षेत्र स्थापित करने के लिए छल, अभिमान या कलह के लिए कोई जगह नहीं है। यह दास, जो कामनाओं से भरा हुआ है और जो वैष्णवों का अपराधी है, श्रील गुरुपादपद्म नित्य-लीला-प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीमद भक्ति प्रमोद पुरी गोस्वामी ठाकुर से प्रार्थना करता हूँ कि कृप्या मुझे आपके दिव्य चरण कमलों की सेवा के लिए उपरोक्त वर्णित चार वैष्णव गुणों का पालन करने का अधिकार प्रदान करें। कृप्या मुझे हरे कृष्ण महामंत्र का जप करने का आशीर्वाद दें, और मेरी अंतिम श्वास तक मैं अपराधों से मुक्त रहुँ। भक्ति धर्म का पालन करने के लिए मेरे हृदय में तीव्र शक्ति का

संचारण करें, जो एकमात्र मार्ग है जिसके द्वारा सर्वोच्च आध्यात्मिक संपत्ति प्राप्त होती है।

आपके चरण कमलों की धूल का कण बनने की आशा रखने वाला एक अयोग्य सेवक,

बी . बी . बोधायन